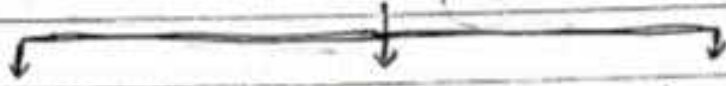
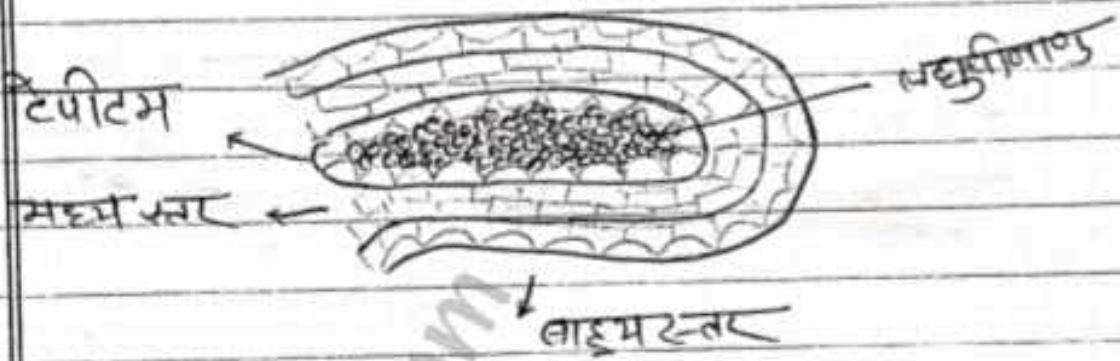


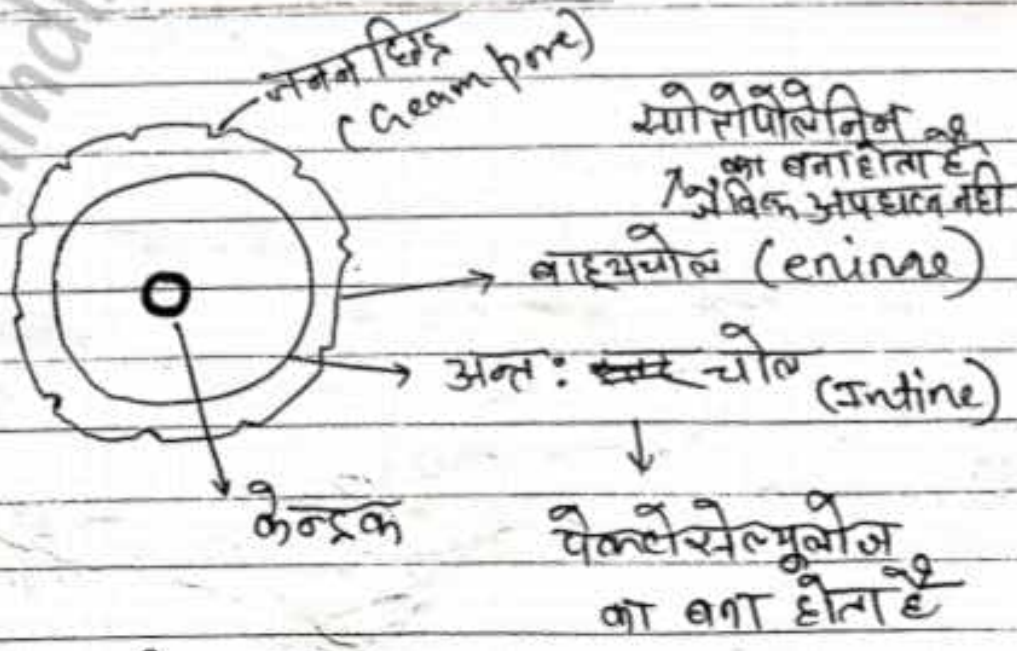
(3) प्राथमिक अलिप्त कोशिका
 यह कोशिका विकसित होकर 3 स्तरों में विभक्त होती है



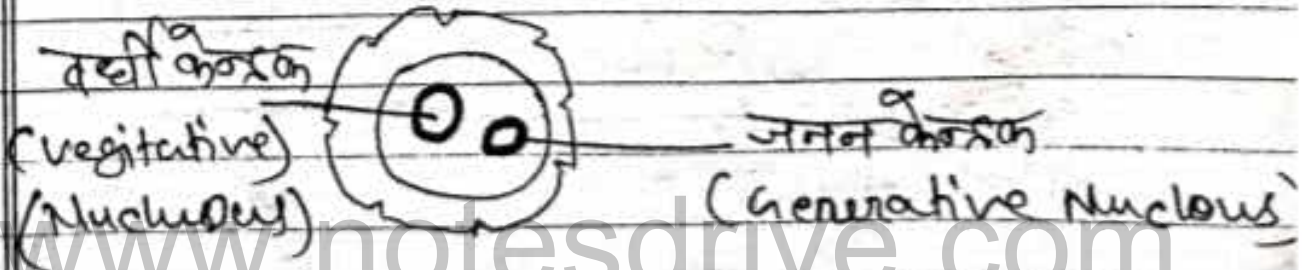
- (1) बाह्य स्तर (2) मध्य स्तर (3) लेपीटम
 1-3 तंत्र



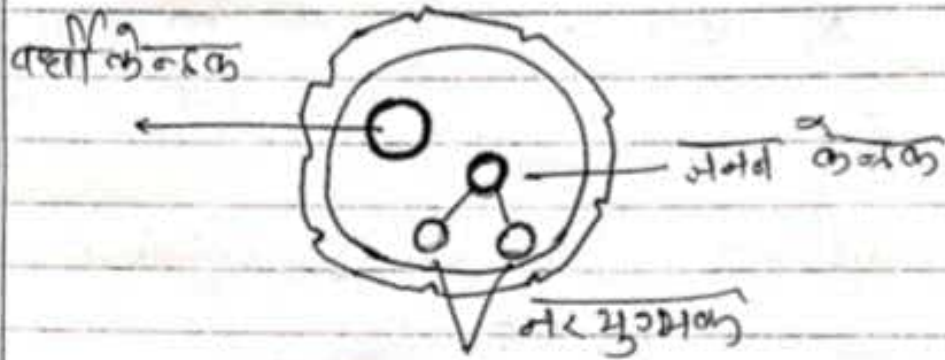
पराग कण की संरचना



केन्द्रक का विभाजन



(पराग कण)



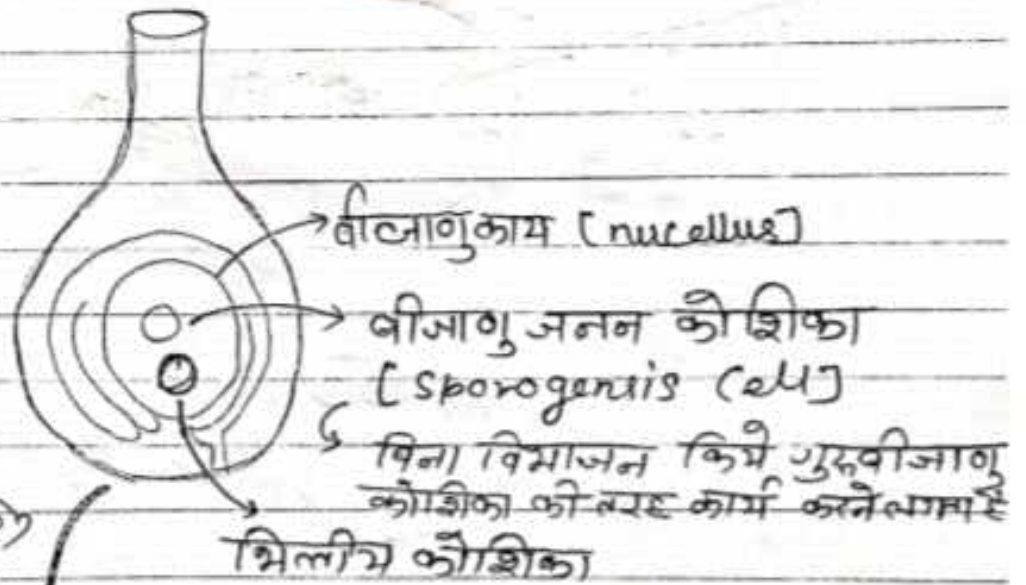
यह नर भ्रूणमूक भाग के वृत्तिकाग्र पर पहुँचकर जनन केन्द्रक द्वारा बनाई गई गई परागनली से बीजाणु में पहुँचता है।

बीजाणु की संरचना

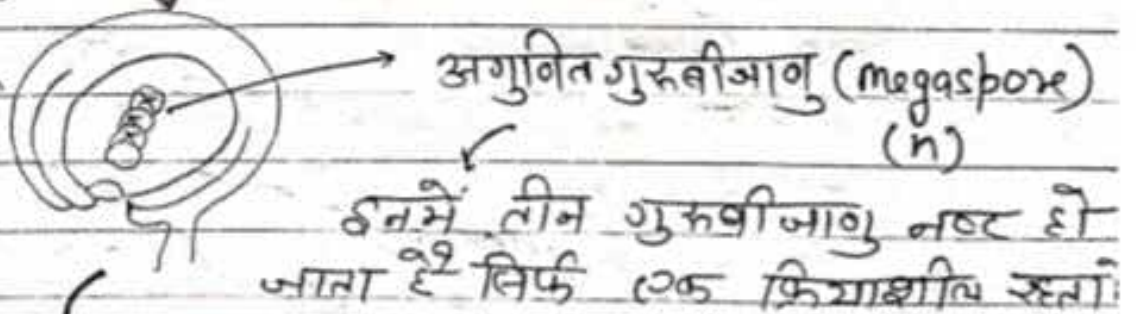


भ्रूण कौश में मात कौशिका एवं आव
 केन्द्र होता है।

गुरुबीजाणुजनन [megasporogenesis]



बीजाणु जनन कौशिका में
 अधिसूत्री विभाजन होता है जिसे
 चार अणुगुणित गुरुबीजाणु
 बनता है।



क्रियाशील गुरुबीजाणु सम्पूर्ण विभाजन द्वारा वी
 कौशिका बना लेता है-



इसमें फिर से समसूत्री विभाजन होता है तथा ये दोनो कोशिकाएँ विभाजित होकर चार कोशिकाएँ बना लेती है।

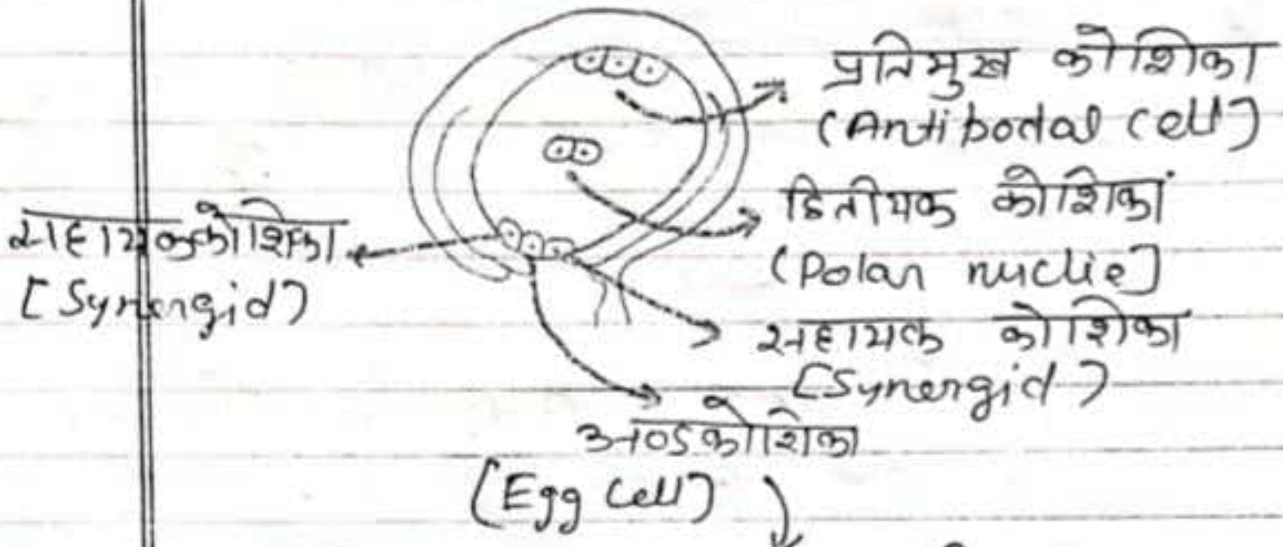


इसमें फिर से समसूत्री विभाजन होता है जिसमें कुल आठ कोशिकाओं का निर्माण होता है जिसे भ्रूण कहते हैं।



भ्रूण कोशिका [Embryosec]

ये कोशिकाएँ व्यवस्थित होती है जिसमें एक कोशिका निभाग से केन्द्र में तथा बीजाणु दार से एक कोशिका केन्द्र में आकर द्वितीयक केन्द्रक बनाता है, तथा निभाग और बीजाणु दार में तीन-तीन कोशिकाएँ बच जाती है, निभाग की तीन कोशिकाओं को प्रतिमुख कोशिकाएँ कहते है बीजाणु दार की तीन कोशिकाओं में मध्य कोशिका को अणु-कोशिका तथा किनारी की दोनो कोशिकाओं को सहायक कोशिका कहते है।



यही मादा युग्मक कहलाती है।

❖ परागण [Pollination]

पराग कणों का परागकोश से निकलकर वर्तिकाग्र पर पहुँचना यह प्रक्रिया परागण कहलाती है, ये दो प्रकार का होता है।

① स्वपरागण [Self Pollination] -

परागण • जब स्वयं परागकोश से निकलकर वर्तिकाग्र पर पहुँचना है।

② परपरागण - (Cross Pollination)

इसमें परागण परागकोश से वर्तिकाग्र में विभिन्न माध्यमों से पहुँचना है।

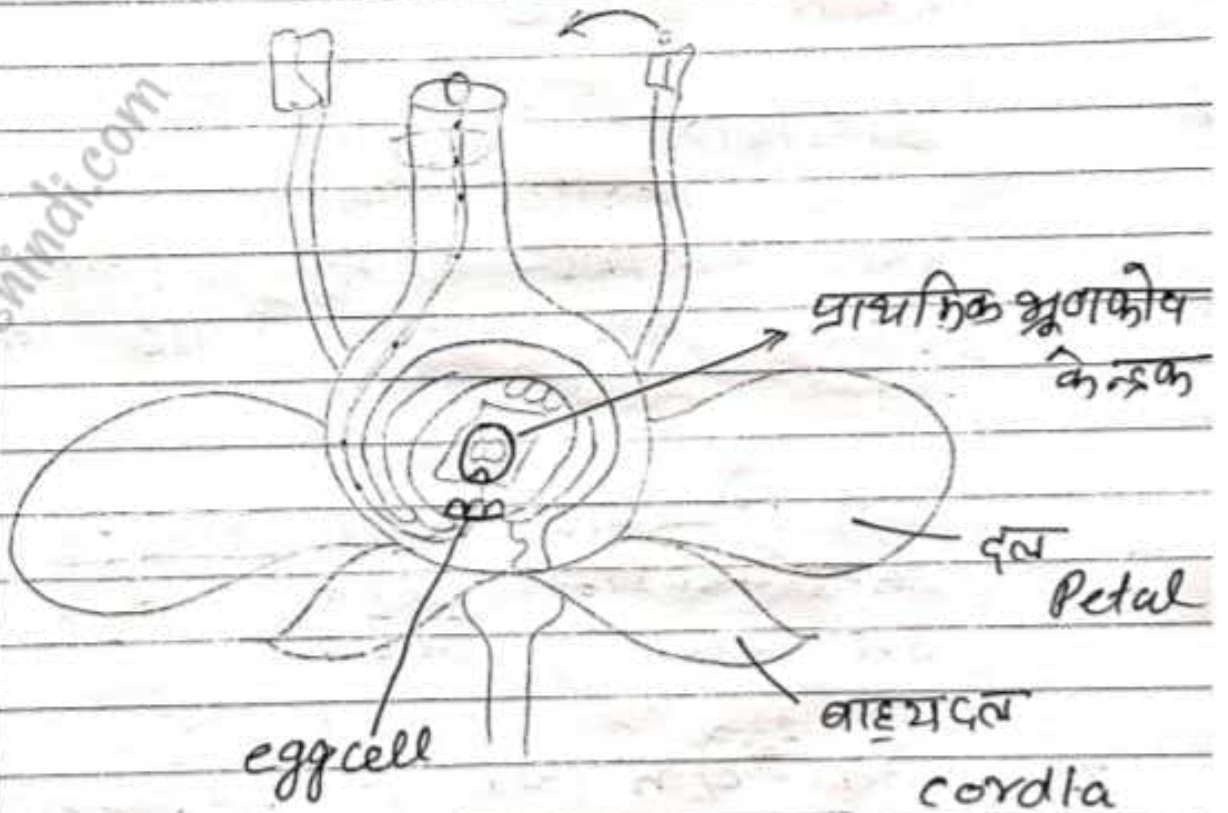
★ कृत्रिम परागण
जब परागण क्रिया मानव द्वारा कराया जाय तो इस प्रक्रिया को कृत्रिम परागण कहलाता है।

इसमें दो प्रक्रिया निम्नलिखित रूप से की जाती है।

(i) विपुंसन [Emasculatation] - जब पौधा का मादा युग्मक लेना हो तब उसके पुंकेसर को काट काट अलग कर दिया जाता है विपुंसन कहलाता है।

(ii) धैलीकरण [Beggining] :- पौधा के अग्रभाग के वर्तिकाग्र पर धैली से दक दिया जाता जिसे धैलीकरण कहते हैं।

परागण - स्त्रीकेसर संकषण या निषेचन
Pollen - Pistil interaction or fertilization



पहला नरमुग्ध -

प्राथमिक भ्रूणकोष विकसित होकर

भ्रूणपोष का निर्माण करता है
और त्रिगुणित मुगमनज बनाता है

दूसरा नरमुग्ध -

अणु कौशिका से दूसरा नरमुग्ध
संश्लेषण करता है
द्विगुणित मुगमनज का निर्माण

करता है

भ्रूणमनुष्य विकसित होकर भ्रूण बनता है

अंडाशय विकसित होकर कृष का निर्माण करता है तथा वक्रित काय विकसित होकर बीज का निर्माण करता है।

एक ही साथ दो नर भ्रूणों का संलयन होता है अतः इस दौरान निषेचन भी कहते हैं।

अनिषेक कल्पन [Parthenocorpy]

जब पुष्प में बिना निषेचन के फल का निर्माण होता है उदाहरण - अंगूर, केला

अनिषेक जनन [Parthenogenesis]

इस प्रक्रिया में बिना निषेचन के ही भ्रूण बनता है अनिषेक जनन कहलाता है